अध्याय -13

वानिकी अनुसंधान एवं मानव संसाधन विकास केन्द्र, छिंदवाड़ा

वानिकी अनुसंधान एवं मानव संसाधन विकास केन्द वर्तमान में उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान के अधीन कार्यरत है। यह केन्द्र 30 मार्च, 1995 को अस्तित्व में आया, लेकिन 3 जनवरी 1996 से इस मानव संसाधन विशेपकर जनजातीय आबादी का विकास करने के उद्देश्य के साथ उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान के एक सैटेलाइट केन्द्र के रूप में घोषित किया गया है। संस्थान विभिन्न अनुसंधान परियोजनाओं पर भी कार्य करता है।

केन्द्र के निम्न मुख्य उद्देश्य हैं :

- सतत् वन प्रबन्ध के लिए पारिस्थितिकी एवं आनुवंशिकी के ठोस सिद्धान्तों पर आधारित आधुनिक वैज्ञानिक वन प्रबन्ध द्वारा वन उत्पादकता बढ़ाना।
- वन उपज के उपयोजन में सुधार करना।
- संसाधन प्रबन्ध और पर्यावरण सुरक्षा से संबंधित सामाजिक आर्थिक पहलुओं को देखना।
- प्रशिक्षण द्वारा मानव संसाधन का विकास करना।

1998-99 के दौरान जारी पुरानी परियोजनाएं :

परियोजनाए 1 :

पौधशाला और रोपण प्रौद्योगिकी में जूनियर/सीनियर प्रमाणपत्र पाठयक्रम।

उद्देश्य :

ग्रामीण स्व रोजगार और वनों के संरक्षण एवं उत्पादकता की वृद्धि के लिए मानव संसाधान का विकास करना।

उपलब्धियां :

जूनियर प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम के अन्तर्गत नौ प्रशिक्षणार्थियों को प्रशिक्षित किया गया।

परियोजना 2 :

कुछ देशज वन प्रजातियों की छाल, पत्तियों, फलों और जड़ों के उपयोग के लिए पादप रासायनिक जांच।

उद्देश्य :

कुछ देशज वन प्रजातियों की पत्तियों, फलों और जड़ों के उपयोग की सम्भावनाओं का पता लगाना।

उपलब्धियां :

शुटीरिया हिर्सूटा और ब्रायोनिया लेन्सिनिओसा पादप प्रजातियां एकत्र की गई। पृथक्कृत संघटकों का रासायनिक अभिलक्षण प्रगति पर हैं। कवकरोधी और कीटनाशी कार्यकलापों के लिए सारों की प्रारम्भिक जांच की गई।

करीब 45 पारंपरिक रूप से उपयोग की जा रही औषधीय पादप प्रजातियों को एकत्र किया गया। क्लोरोजाइलॉन स्वीटीनिया पोगोस्टीमॉन प्लेक्ट्रोन्थोइडस, आक्सिमम प्रजाति, लेमन घास तेल (सीम्बोपोगान फ्लीक्सूओसस) और कूर्कूमा केसिया से सुगंध तेल निष्कर्षित किया गया। सी. केसिया प्राकृतिक डी-कपूर का एक अच्छा स्रोत पाया गया। मधुका प्रजाति, सीमीकार्पस एनाकार्डियम, केसेल्पिनिया बाल्डूक, बीन्टिलेगो केलिकूलाटा, जट्रोका कर्कश, पोगेमिया पिनाटा और वुकानेनिया लेन्जन से वसीय तेलों को निष्कर्षित किया गया। इनके रासायनिक अभिलक्षण का काम प्रगति पर है।

परियोजनाए 3 :

पौधशालाओं, रोपणों प्राकृतिक वनों में एम्ब्लिका, मेलाइना, टर्मिनेलिया के मुख्य नाशीजीवों की पहचान और उनके नियंत्रण उपाय।

उद्देश्य :

(क) मुख्य नाशीजीव की पहचान करना।

(ख) क्षति एवं रोग नियंत्रण उपायों का मूल्यांकन करना।

उपलब्धिंया :

यूकेलिप्टस ऑफिसिनेलिस, मेलाइना आर्बोरीया और टर्मिनेलिया प्रजाति पर दास नाशिकीटों की पहचान की गई।

बहेड़ा बीज पुन:/छेदक (मैकोबेरिस टर्मिनेला) के विरूद्ध कीटनाशियों के प्रभाव और पादप आधारित उत्पादों का मूल्यांकन करने के लिए प्रयोगशाला एवं क्षेत्र परीक्षण किए गए। यूकेलिप्टस आफिसिनेलिस की चार किस्मों (चकया, एन-7, कन्चन और बनारसी) में गाल बनाने वाली काली इल्ली बीटूसा स्टाइलोफोरा के विस्तृत मौसमीय इतिहास प्रगति पर हैं। थाने और नासिक क्षेत्र (एफ. डी. सी. एम. लि. एम. एम.) में मेलाइना आर्बोरीया की नाशीजीव समस्या का अध्ययन किया गया।

परियोजनाए 4 :

वन प्रबन्धन और पुनर्जनन पर विशेष जोर देते हुए निम्नीकरण स्तर के अनुसार उष्णकटिबंधीय शुष्क पर्णपाती वनों की संरचना और कार्य (जैव मात्रा और पोषण चक्रण)।

उद्देश्य :

उष्णकटिबंधीय पर्णपाती वनों की, उनके विक्षोभ विस्तार के अनुसार, संरचना और कार्यकलाप का विश्लेषण करना।

उपलब्धियां :

विक्षोभ परिमाण के अनुसार सतपुड़ा प्लेटू के दक्षिण छिंदवाड़ा प्रभाग (रेंज-सिलावानी) के उष्णकटिबंधीय शुष्क पर्णपाती सागौन वनों में तीन स्थलों की महत्वपूर्ण वृक्ष प्रजातियों के तुलनात्मक मात्रात्मक संरचना विश्लेषण और पुनर्जनन व्यवहार को विश्लेषित और श्रेणीकृत किया गया। आगे अध्ययन प्रगति पर हैं। प्रधानता की सान्द्रता ने विविधता तालिका के पुनर्जनन पर प्रतिकूल प्रभाव था। इसके अलावा, स्टैण्ड आयु ने भी पुनर्जनन को प्रभावित किया।

परियोजनाए 5 :

बुकानेनिया लेन्जन की कायिक प्रवर्धन विधियों का मानकीकरण।

उद्देश्य :

(क) बुकानेनिया लेन्जन के लिए उपयुक्त कायिक प्रवर्धन विधियों को मानकीकृत और आनुवंशिक रूप से उत्कृष्ट प्रजाति/क्लोनों को संरक्षित करना।

(ख) प्रजातियों का बहुमात्र गुणन और क्लोनीय कायिक बीजोद्यानों की स्थापना।

उपलब्धियां :

पौधशाला स्थापित की गई। स्थानीय रूप से तैयार निम्न लागत धूमिका कक्ष स्थापित किया गया। बुकानेनिया लेन्जन जड़ कलमों के कायिक प्रवर्धन पर विभिन्न लम्बाई, मोटाई और हार्मोनों के प्रभाव का अध्ययन प्रगति पर है।

परियोजनाए 6 :

(नाबार्ड परियोजना) - छिंदवाड़ा (म. प्र.) में कारावोह सूक्ष्म जल संभर में कृषि वानिकी मॉडलों का विकास।

उद्देश्य :

विभिन्न कृषि वानिकी मॉडलों का विकास करना।

उपलब्धियां :

विभिन्न कृषि वानिकी मॉडलों का विकास करने के लिए वानिकी और औद्यानिकी पौधों (10587) की विभिन्न प्रजातियों का रोपण किया गया। उत्पादन बढ़ानें के लिए जैव उर्वरकों को प्रयुक्त किया गया। प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण किया जा रहा है।

विस्तार :

सृजित सुविधाएं एवं प्रदत्त सेवाएं :

1. बारह गांव वन समिति के लिए सूक्ष्म नियोजन पर कार्य पूरा किया गया और 60,000 रूपये का राजस्व सृजित किया गया।
2. स्थानीय वन विभागों, गैर-सरकारी संगठन और शैक्षिक संस्थान के लिए पुस्तकालय सेवाओं का विस्तार किया गया।
3. संस्थान के पास वानिकी के विभिन्न पहलुओं पर काफी मात्रा में वीडियों फिल्में का संग्रह है। कार्यशालाओं के दौरान/सीनियर प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम के प्रशिक्षणार्थियों और किसानों को इन्हें दिखाया जाता है।

प्रौद्योगिकी हस्तान्तरण :

1. निचले स्तर के कार्यकर्ताओं की तकनीकी दक्षताओं में सुधार करने के लिए पौधशाला और रोपण प्रौद्योगिकी पर जूनियर प्रमाणपत्र प्रशिक्षण पाठ्यक्रम का आयोजन किया गया।
2. चौराई, छिन्दी, हराई बटकाखापा और अमरवारा में संयुक्त वन प्रबन्ध के अन्तर्गत पांच ग्राम स्तर कार्यशालाएं आयोजित की गई।
3. ''चिरौजी वुकानेनिया लेन्जन'' पर एक दिवसीय कार्यशाला की गई। अन्य संगठनों/ संस्थानों/ राज्यों आदि के साथ सहानुबंध हैं।

राज्य वन विभाग, कृषि विज्ञान केन्द्र, उद्यमिता विकास केन्द्र, शिक्षण संस्थान, गैर सरकारी संगठनों और किसानों के साथ प्रभावी संबंध विकसित किए गए।

संस्थान द्वारा प्रकाशित प्रकाशन व विस्तार साहित्य :

1. ''फॉरेस्ट पेस्ट कन्ट्रोल''; ए वर्क वुक, डा० पी. बी. मेशराम और डा० ए. के. पाण्डे।
2. भिलवा (सीमीकार्पस एनाकार्डियम) पर पुस्तिका; डा० पी.बी. मेशराम और डा० ए.के. पाण्डे।

वित्तीय विवरण

I योजना			
क्र.सं.	उप-शीर्ष		व्यय (रू० लाख में)
1.	क	राजस्व व्यय	
		(i) अनुसंधान	21.79
		(ii) प्रशासनिक सहायता	12.06
		राजस्व व्यय 'क' का योग	33.85
	ख	ऋण और अग्रिम	
		(i) ऋण अग्रिम (वाहन)	-
		(ii) गृह निर्माण अग्रिम	0.75
		'ख' का योग	0.75
	ग	पूंजीगत व्यय	
		(i) भवन व सड़कें	-
		(ii) उपकरण, पुस्तकालय पुस्तकें	2.19
		(iii) वाहन	-
		'ग' का योग	2.19
		क+ख+ग (योजना) का कुल योग	36.79

II गैर- योजना			
क्र.सं.		उप-शीर्ष	व्यय (रू० लाख में)
1.	क	राजस्व व्यय	
		(i) अनुसंधान	-
		(ii) प्रशासनिक सहायता (वेतन)	-
		कुल योग गैर-योजना	-
		योजना+गैर-योजना का योग	36.79

III निर्धारित परियोजना			
क्र.सं.		उप-शीर्ष	व्यय (रू० लाख में)
1.	क.	विश्व बैंक परियोजना	0.79
	ख.	यू०एन०डी०पी० परियोजना	-
	ग.	नाबार्ड परियोजना	-
	घ.	एफ. ओ. आर. टी. आई. पी.	-
		(क+ख+ग+घ) निर्धारित परियोजना का कुल योग	0.79